

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

Opportunity for India: IMF

GDP forecast cut to 6.7%; medium-term recovery seen from govt's reforms

दिनांक: 04-09-2025

गुरुवार

The global economy is recovering, albeit hesitantly. The latest World Economic Outlook of the International Monetary Fund has downgraded its growth forecast for 2019.

International don'ts: Fund forecast on Tuesday said its growth

forecast, noting that the broad-based nature of global acceleration in economic activity will support growth, remains resilience in the future.

Policy makers will have to ensure that the

global economy remains on track, despite the challenges ahead.

- » विदेश मंत्री द्वारा यूरोपीय संघ-भारत मुक्त व्यापार समझौते पर बल
- » सशक्त महिलाएं ही विकसित भारत की नींव
- » बैंकिंग उद्योग: भारत की विकास गाथा का एक स्तंभ
- » मेजराना कण
- » DISCOM की नियामक परिसंपत्तियों पर सर्वोच्च न्यायालय का आदेश

विषय सूची

संक्षिप्त समाचार

- » सेशल्स (Seychelles)
- » एकैथरमीबा
- » अत्यधिक वर्षा से कर्नाटक के कॉफी बागानों को खतरा
- » पीएम गतिशक्ति के अंतर्गत नेटवर्क योजना समूह की 99वीं बैठक
- » सतत विमानन ईंधन(SAF)
- » जीएसटी परिषद की 56वीं बैठक की सिफारिशें
- » भारत का प्रथम गिद्ध संरक्षण पोर्टल
- » अभ्यास युद्ध अभ्यास

The Real Day-Night Test Is In Mum

SURGICAL STRIKE AT DAWN: BOTH SIDES CLAIM MAJORITY



विदेश मंत्री द्वारा यूरोपीय संघ-भारत मुक्त व्यापार समझौते पर बल

संदर्भ

- भारत और जर्मनी ने हाल ही में व्यापार को दोगुना करने और भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते (FTA) को शीघ्रता से पूरा करने के प्रयासों को तेज करने की प्रतिबद्धता जताई।

परिचय

- जर्मन विदेश मंत्री भारत की राजकीय यात्रा पर थे।
- भारतीय और जर्मन विदेश मंत्रियों ने सेमीकंडक्टर, छात्र गतिशीलता, रक्षा व्यापार और भारत-EU मुक्त व्यापार समझौते पर सहयोग पर चर्चा की।
 - दोनों मंत्रियों ने वर्ष के अंत तक भारत-EU मुक्त व्यापार समझौते के लिए वार्ताओं को पूरा करने के महत्व को रेखांकित किया।
- भारत की दो स्तरों पर सहभागिता**
 - EU एक समूह के रूप में:** व्यापार, तकनीक, सुरक्षा, विदेश नीति पर नियमित शिखर सम्मेलन और रणनीतिक संवाद।
 - प्रमुख EU सदस्य देशों के साथ द्विपक्षीय रूप से:** फ्रांस, जर्मनी, नॉर्डिक और पूर्वी यूरोपीय देशों के साथ संबंधों को प्रगाण करना।

भारत-EU मुक्त व्यापार समझौता

- वार्ता पुनः आरंभ:** 2022 में 8 वर्षों के पश्चात वार्ता फिर शुरू हुई; 2013 में बाजार पहुंच को लेकर मतभेदों के कारण वार्ता स्थगित थी।
- उद्देश्य:** वस्तुओं, सेवाओं, निवेश और भौगोलिक संकेतों को शामिल करते हुए एक व्यापक व्यापार समझौते को अंतिम रूप देना।
- वार्ता संरचना:** यह समझौता दो चरणों में पूरा किया जाएगा, जैसा कि भारत ने ऑस्ट्रेलिया के साथ विगत एफटीए में अपनाया था।
 - यह आंशिक रूप से वैश्विक व्यापार वातावरण की अस्थिरता, जैसे अमेरिका की टैरिफ नीतियों, के कारण है।

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष ने वर्ष के अंत तक समझौता पूरा करने पर सहमति व्यक्त की।
- मुख्य फोकस क्षेत्र**
 - बाजार पहुंच:** EU द्वारा ऑटोमोबाइल, चिकित्सा उपकरण, वाइन, स्पिरिट्स, मांस और पोल्ट्री में शुल्क कटौती की मांग।
 - सेवाएं और निवेश:** वस्तुओं, सेवाओं और निवेश में बाजार पहुंच प्रस्तावों पर ध्यान केंद्रित।
 - नियामक पहलू:** बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) ढांचे को सुदृढ़ करना।
 - स्वच्छता और पादप स्वच्छता उपायों, तकनीकी व्यापार बाधाओं, सीमा शुल्क, सरकारी खरीद और सततता पर समझौते।

भारत-जर्मनी द्विपक्षीय संबंध

- संबंधों की स्थापना:** भारत द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1951 में जर्मनी के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने वाले प्रथम देशों में से एक था।
 - 2021 में राजनयिक संबंधों की 70वीं वर्षगांठ मनाई गई।
- रणनीतिक साझेदारी:** 2000 से भारत और जर्मनी के बीच 'रणनीतिक साझेदारी' है; 2025 में इसकी 25वीं वर्षगांठ होगी।
- अंतर-सरकारी परामर्श (IGC) - 2011:** यह ढांचा कैबिनेट स्तर पर सहयोग की समीक्षा और नए क्षेत्रों की पहचान की अनुमति देता है।
 - भारत उन चुनिंदा देशों में है जिनके साथ जर्मनी का ऐसा संवाद तंत्र है।
- रक्षा सहयोग:** 2006 में द्विपक्षीय रक्षा सहयोग समझौता हुआ, जो रक्षा संबंधों के लिए ढांचा प्रदान करता है।
 - जर्मनी ने भारत के साथ कई बहुपक्षीय अभ्यासों में भाग लिया, जैसे: MILAN, PASSEX, EX TARANG SHAKTI-1।
- व्यापार सहयोग:** भारत-जर्मनी द्विपक्षीय व्यापार 2024 में US\$ 33.40 बिलियन के उच्चतम स्तर पर पहुंचा, जिसमें भारत से निर्यात US\$ 15.09 बिलियन और जर्मनी से आयात US\$ 18.31 बिलियन रहा।
 - 2024 में भारत जर्मनी का 23वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था, जबकि जर्मनी भारत का

8वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार और EU में सबसे बड़ा भागीदार था।

- **विकास साझेदारी:** जर्मनी भारत का एक प्रमुख विकास भागीदार है (लगभग €24 बिलियन की प्रतिबद्धता)।
- **हरित और सतत विकास साझेदारी (2022):** जर्मनी ने 2030 तक €10 बिलियन देने का वादा किया।
 - ▲ नवीकरणीय ऊर्जा, मेट्रो परियोजनाओं, हरित गलियारों और स्मार्ट शहरों में सहयोग भारत के जलवायु लक्ष्यों एवं SDG प्रतिबद्धताओं को सीधे समर्थन देता है।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में स्थायी सीट के लिए समर्थन।
 - ▲ G20, UN, WTO, COP जलवायु वार्ताओं में समन्वय।
 - ▲ दोनों देश नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था और इंडो-पैसिफिक सुरक्षा पर बल देते हैं।
- **भारतीय प्रवासी:** जर्मनी में लगभग 2.46 लाख (2023) भारतीय पासपोर्ट धारक और भारतीय मूल के लोग हैं।
 - ▲ यह प्रवासी समुदाय मुख्यतः पेशेवरों, शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों, व्यवसायियों, नर्सों एवं छात्रों से बना है।

निष्कर्ष

- जर्मनी भारत के लिए यूरोप का प्रवेश द्वारा, हरित तकनीक एवं नवाचार में अग्रणी, और एक बहुध्रुवीय, सतत विश्व व्यवस्था के निर्माण में साझेदार के रूप में महत्वपूर्ण है।
- यह संबंध भारत की आर्थिक आधुनिकीकरण, जलवायु कार्रवाई, कौशल गतिशीलता और रणनीतिक सुरक्षा की प्राथमिकताओं को पूरक करता है।

Source: TH

सशक्त महिलाएं ही विकसित भारत की नींव संदर्भ

- प्रधानमंत्री मोदी ने बिहार राज्य जीविका निधि साख सहकारी संघ लिमिटेड का शुभांभ किया, यह कहते हुए कि “सशक्त महिलाएं विकसित भारत की नींव हैं।”

बिहार राज्य जीविका निधि साख सहकारी संघ लिमिटेड के बारे में

- **जीविका निधि** बिहार में महिला उद्यमियों को समर्थन देने के लिए स्थापित एक राज्य-स्तरीय सहकारी वित्तीय संस्था है।
- **उद्देश्य:** समय पर कम ब्याज दरों पर ऋण प्रदान करना, जिससे 18%-24% ब्याज लेने वाले माइक्रोफाइनेंस संस्थानों (MFIs) पर निर्भरता कम हो।
- **सदस्यता:** जीविका स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के सभी पंजीकृत क्लस्टर-स्तरीय संघ इस संस्था का हिस्सा होंगे।
- **वित्तपोषण:** बिहार सरकार और केंद्र सरकार दोनों इसमें धनराशि प्रदान करेंगी।
- **प्रौद्योगिकी:** यह प्रणाली पूरी तरह से डिजिटल है, जिससे मोबाइल फोन के माध्यम से ऋण लेन-देन सहज रूप से संभव है। लगभग 12,000 सामुदायिक कार्यकर्ताओं को टैबलेट दिए जा रहे हैं ताकि संचालन में सुविधा हो।

विकसित भारत में सशक्त महिलाओं का योगदान कैसे होता है?

- **आर्थिक वृद्धि:** अध्ययन दर्शाते हैं कि श्रम बल में लैंगिक अंतर को समाप्त करने से भारत की अर्थव्यवस्था में 2025 तक लगभग \$770 बिलियन (लगभग 18% GDP) की वृद्धि हो सकती है।
- **उद्यमिता:** SHGs और महिला-नेतृत्व वाले उद्यम स्थानीय रोजगार सृजित करते हैं, ग्रामीण मांग को बढ़ाते हैं और सतत व्यवसायों को बढ़ावा देते हैं, जिससे बुनियादी स्तर पर विकास गहरा होता है।
- **शिक्षा और मानव संसाधन:** शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएं अपने बच्चों की शिक्षा में अधिक निवेश करती हैं, जिससे भविष्य की पीढ़ियों के लिए साक्षरता एवं कौशल परिणाम बेहतर होते हैं।
- **स्वास्थ्य और पोषण:** सशक्त महिलाएं स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण पर बेहतर घेरलू निर्णय लेती हैं, जिससे भारत के सामाजिक विकास संकेतकों में सुधार होता है।

- शासन और लोकतंत्र:** पंचायती राज संस्थाओं में महिला नेताओं (एक-तिहाई सीटें आरक्षित) द्वारा जल, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देकर शासन को बेहतर बनाया जाता है।
- सामाजिक समानता:** महिला सशक्तिकरण गरीबी को कम करता है, बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों से लड़ता है और “सबका साथ, सबका विकास” के अनुरूप समावेशी विकास सुनिश्चित करता है।

महिलाओं के लिए व्यापक सरकारी पहलें

- आर्थिक सशक्तिकरण**
 - दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY - NRLM): देश में 10.05 करोड़ महिलाओं को 90.90 लाख महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) में संगठित किया गया है।
 - नमो ड्रोन दीदी योजना (2023): 15,000 महिला SHG सदस्यों को कृषि सेवाओं के लिए ड्रोन संचालन का प्रशिक्षण।
 - लखपति दीदी,
 - ड्रोन दीदी,
 - बैंक सखी
- सामाजिक अवसंरचना और कल्याण**
 - प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY): घर महिलाओं के नाम या संयुक्त रूप से पंजीकृत किए जाते हैं, जिससे संपत्ति स्वामित्व और निर्णय लेने की शक्ति बढ़ती है।
 - प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना: पारंपरिक ईंधनों से उत्पन्न श्रम और स्वास्थ्य जोखिम को कम करते हुए 10 करोड़ से अधिक मुफ्त LPG कनेक्शन प्रदान किए गए।
- स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा**
 - आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM-JAY): प्रति परिवार ₹5 लाख वार्षिक स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करता है, जिससे महिलाओं के लिए जेब से व्यय कम होता है।

- पोषण अभियान:** महिलाओं और बच्चों में स्टंटिंग, कुपोषण और एनीमिया को कम करने पर ध्यान केंद्रित।
- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना:** गर्भावस्था के दौरान मजदूरी हानि के लिए ₹5,000 की मातृत्व लाभ राशि।
- राजनीतिक और सामाजिक सशक्तिकरण**
 - महिला आरक्षण विधेयक 2023: संसद और राज्य विधानसभाओं में 33% आरक्षण के लिए संवैधानिक प्रावधान।
 - वन स्टॉप सेंटर: हिंसा का सामना कर रही महिलाओं को सहायता प्रदान करने के लिए 700 से अधिक केंद्र चालू हैं।

आगे की राह

- महिलाओं की कार्यबल भागीदारी बढ़ाना:** अधिक लचीले रोजगार सृजित करना, वर्क-फॉम-होम विकल्पों को बढ़ावा देना, बाल देखभाल सुविधाओं का विस्तार करना और सुरक्षित परिवहन प्रदान करना ताकि श्रम बाजार में महिलाओं की भूमिका बढ़े।
- वेतन और कौशल अंतर को समाप्त करना:** समान वेतन कानूनों को लागू करना, व्यावसायिक एवं डिजिटल कौशल कार्यक्रमों का विस्तार करना तथा STEM, हारित अर्थव्यवस्था और रक्षा विनिर्माण जैसे उच्च-विकास क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना।

Source: PIB

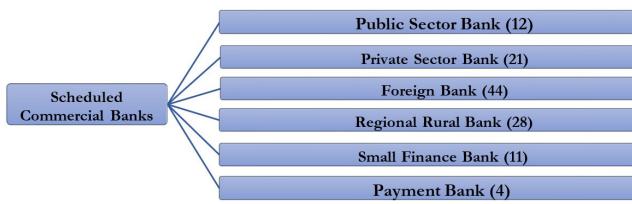
बैंकिंग उद्योग: भारत की विकास गाथा का एक स्तंभ

संदर्भ

- हाल ही में भारत के राष्ट्रपति ने देश की आर्थिक दिशा को आकार देने में भारत के बैंकिंग क्षेत्र की परिवर्तनकारी भूमिका को रेखांकित किया।

भारत में बैंकिंग उद्योग के बारे में

- भारत का बैंकिंग क्षेत्र एक वित्तीय मध्यस्थ है, जो क्रांति वितरण, तरलता प्रबंधन, वित्तीय समावेशन का प्रमुख माध्यम है और समष्टि आर्थिक प्रबंधन की परिचालन गीढ़ के रूप में कार्य करता है।



- ▲ **सहकारी और स्थानीय क्षेत्रीय बैंक:** विशेष बाजारों और ग्रामीण जनसंख्या की सेवा करते हैं।
- ▲ **विकास वित्तीय संस्थान:** जैसे NABARD, SIDBI और IDBI—कृषि, लघु उद्योगों और अवसंरचना को सेवा प्रदान करते हैं।
- ▲ **गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ (NBFCs):** 9,000 से अधिक पंजीकृत संस्थाएँ वंचित वर्गों को क्रण वितरण में सहायता करती हैं।

भारत के राष्ट्र निर्माण में बैंकिंग उद्योग की भूमिका

- **मौद्रिक प्रबंधन में भूमिका:** भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) मौद्रिक प्राधिकरण के रूप में अपनी नीति को लागू करने के लिए बैंकों का उपयोग करता है:
 - ▲ **ब्याज दर संचरण:** रेपो दर में परिवर्तन सीधे तौर पर बैंकों की क्रण और जमा दरों को प्रभावित करता है।
 - ▲ **तरलता संचालन:** बैंक RBI की वेरिएबल रेट रेपो (VRR) और रिवर्स रेपो (VRER) नीलामी में भाग लेते हैं ताकि अल्पकालिक तरलता का प्रबंधन हो सके।
 - ▲ **क्रण विस्तार:** व्यक्तिगत क्रण, सेवाओं और कृषि के माध्यम से मौद्रिक संचरण एवं आर्थिक गतिविधियों को समर्थन मिलता है।
- **राजकोषीय प्रबंधन में भूमिका:**
 - ▲ **सार्वजनिक क्रण प्रबंधन:** बैंक सरकारी प्रतिभूतियों (G-Secs) में निवेश करते हैं, जिससे राजकोषीय घटे को वित्तपोषण मिलता है।
 - ▲ **सब्सिडी वितरण:** डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT) के माध्यम से बैंक कल्याणकारी योजनाओं जैसे पीएम-किसान और LPG सब्सिडी का कुशल वितरण सुनिश्चित करते हैं।
 - **प्रधानमंत्री जन धन योजना** जैसी पहलें, जिनके माध्यम से 56 करोड़ से अधिक शून्य-बैलेंस बैंक खाते खोले गए हैं।

- **डिजिटल उपकरण** जैसे UPI, मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल बॉलेट्स ने विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में वित्तीय सेवाओं की पहुंच में क्रांति ला दी है।
- ▲ **कर संग्रह और रिफंड:** बैंक आयकर, GST एवं सीमा शुल्क के लिए डिजिटल भुगतान की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे राजकोषीय संचालन सुव्यवस्थित होता है।
- **आर्थिक वृद्धि और क्रण विस्तार:** वित्त मंत्रालय के अनुसार, भारतीय बैंकिंग प्रणाली जमाकर्ताओं से उधारकर्ताओं तक संसाधनों का कुशल आवंटन करती है, जिससे आर्थिक दक्षता और वृद्धि को बढ़ावा मिलता है।
- ▲ **MSMEs को समर्थन:** बैंक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को अनुकूलित क्रण समाधान प्रदान करते हैं, जो रोजगार और नवाचार के प्रमुख चालक हैं।
- ▲ **अवसंरचना वित्तपोषण:** बैंकों से दीर्घकालिक वित्तपोषण सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों और डिजिटल अवसंरचना को समर्थन देता है—जो राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक हैं।
- **कृषि को समर्थन और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा:** बैंक वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों और एग्री-टेक पहलों के माध्यम से कृषि को अधिक सतत एवं लाभकारी बना सकते हैं।
- ▲ **किसान क्रेडिट कार्ड:** रूपे कार्ड में परिवर्तित करने से ग्रामीण वित्तीय सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलता है।

भारत के बैंकिंग उद्योग की चिंताएँ और चुनौतियाँ

- **एसेट गुणवत्ता और गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ (NPAs):**
 - ▲ **छिपे हुए दबाव:** क्रण वसूली, विशेष रूप से संकट के बाद के पुनर्गठन में, क्रण चूक के साथ सामंजस्यशील नहीं है।
 - ▲ **क्षेत्रीय कमज़ोरियाँ:** MSMEs और कृषि क्षेत्र को क्रण पहुंच संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जिससे डिफॉल्ट जोखिम बढ़ रहा है।

- पूँजी पर्याप्तता और बेसल III अनुपालन:
 - ▲ बेसल III संक्रमण: बड़े बैंक अनुकूलन कर रहे हैं, लेकिन छोटे संस्थानों को वैश्विक मानकों को पूरा करने में कठिनाई हो सकती है।
 - ▲ अंतर-बैंक संबंध: उच्च आपसी जुड़ाव वित्तीय आघातों के दौरान प्रणालीगत जोखिम को बढ़ाता है।
- वित्तीय समावेशन बनाम लाभप्रदता:
 - ▲ ग्रामीण पहुंच: बैंक वंचित क्षेत्रों में विस्तार कर रहे हैं, लेकिन डिजिटल साक्षरता और अवसंरचना की कमी बनी हुई है।
 - ▲ नेट इंटरेस्ट मार्जिन: भारतीय बैंक वैश्विक समकक्षों की तुलना में उच्च मार्जिन बनाए रखते हैं, जिससे दक्षता और प्रतिस्पर्धा पर प्रश्न उठते हैं।
- प्रतिस्पर्धा और समेकन:
 - ▲ प्रतिस्पर्धा में कमी: विलय से बाजार एकाग्रता और ग्राहक विकल्पों में कमी हो सकती है।
 - ▲ जोखिम लेने का व्यवहार: निजी बैंकों के बीच तीव्र प्रतिस्पर्धा जोखिमपूर्ण ऋण और निवेश रणनीतियों को उत्पन्न कर सकती है।
- साइबर सुरक्षा खतरे:
 - ▲ खतरों के प्रकार: फ़िशिंग, रैनसमवेयर, DDoS हमले और नकली ऐप्स वित्तीय स्थिरता के लिए गंभीर जोखिम उत्पन्न करते हैं।
 - ▲ उच्च जोखिम: भारत में रिपोर्ट किए गए सभी साइबर घटनाओं में लगभग एक-पाँचवां हिस्सा बैंकों से संबंधित होता है।

भारत के बैंकिंग उद्योग में प्रमुख सुधार

- बैंकिंग कानून (संशोधन) अधिनियम, 2025: इसने पाँच प्रमुख बैंकिंग कानूनों में 19 संशोधन किए:
 - ▲ शासन सुधार: सहकारी बैंकों में निदेशकों का कार्यकाल 97वें संविधान संशोधन के अनुरूप किया गया।
 - ▲ लेखा परीक्षा सुधार: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSBs) को वैधानिक लेखा परीक्षकों को प्रतिस्पर्धी पारिश्रमिक देने की अनुमति दी गई, जिससे लेखा गुणवत्ता में सुधार हुआ।

- ▲ निवेशक संरक्षण: PSBs अब अप्राप्त शेयरों और बॉन्ड रिडेम्पशन राशि को निवेशक शिक्षा और संरक्षण निधि (IEPF) में स्थानांतरित कर सकते हैं।
- ▲ महत्वपूर्ण हित सीमा: ₹5 लाख से संशोधित होकर ₹2 करोड़ कर दी गई, जिससे पुरानी परिभाषाओं का आधुनिकीकरण हुआ।
- PSB पुनरुद्धार के लिए 4R रणनीति (2014): इसमें शामिल हैं:

Recognising Npas transparently to ensure accurate identification of stressed assets.

Resolution and Recovery of Npas through targeted measures and legal frameworks.

Recapitalising PSBs to strengthen their financial position and lending capacity.

Reforms in governance and operational practices to enhance efficiency and resilience.

- बैंक बोर्ड ब्यूरो (BBB): बैंक नेतृत्व के लिए पेशेवर चयन।
- ▲ पूँजी नियोजन और शासन के लिए रणनीतिक मार्गदर्शन।
- अपराधमुक्ति और अनुपालन में सहजता:
 - ▲ जन विश्वास विधेयक 2.0, केंद्रीय बजट 2025 में प्रस्तावित:
 - वित्तीय कानूनों में 100 से अधिक प्रावधानों को अपराधमुक्त करना।
 - MSMEs और स्टार्टअप्स के लिए अनुपालन को सरल बनाना।
 - विश्वास-आधारित नियामक ढांचे को बढ़ावा देना।

Source: TH

मेजराना कण

संदर्भ

- मेजोराना कणों को क्वांटम कंप्यूटरों में डिकोहेंस (सूचना विघटन) की समस्या के संभावित समाधान के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि ये स्वाभाविक रूप से स्थिर और शोर-प्रतिरोधी क्यूबिट्स प्रदान करते हैं।

मेजोराना कण

- मेजोराना कण, या मेजोराना फर्मियन, ऐसे परिकल्पित कण हैं जो स्वयं अपने प्रतिकण होते हैं।
 - अपनी आत्म-प्रतिकण प्रकृति के कारण, ये विद्युत आवेश नहीं ले सकते।
- 1937 में भौतिक विज्ञानी एत्तोरे मेजोराना ने मेजोराना कण के अस्तित्व का प्रस्ताव रखा था।
- अब तक कोई मौलिक मेजोराना कण प्रत्यक्षतः नहीं पाया गया है, लेकिन वैज्ञानिकों ने विशेष सुपरकंडकिटिंग पदार्थों में ऐसे क्वासिकण बनाए हैं जो मेजोराना की तरह व्यवहार करते हैं।

महत्त्व

- ध्वनि प्रतिरोध(Noise Resistance):** मेजोराना मोड्स क्वांटम सूचना को गैर-स्थानीय रूप से संग्रहीत करने की अनुमति देते हैं, जिसमें प्रत्येक क्यूबिट की स्थिति दो दूरस्थ हिस्सों में विभाजित होती है।
 - स्थानीय व्यवधान आसानी से एन्कोड की गई जानकारी को नष्ट नहीं कर सकते, जिससे ये स्वाभाविक रूप से डिकोहोरेंस के प्रति प्रतिरोधी होते हैं।
- विस्तारशीलता:** यदि प्रयोगात्मक रूप से साकार किया जाए, तो मेजोराना क्यूबिट्स सरल, अधिक विस्तार योग्य क्वांटम कंप्यूटरों का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं, जो आज की सीमाओं से परे समस्याओं को हल करने में सक्षम होंगे।

क्वासिकण क्या है?

- क्वासिकण एक अवधारणा है जिसका उपयोग यह वर्णन करने के लिए किया जाता है कि किसी प्रणाली में कणों का समूह कैसे परस्पर क्रिया करता है।
- क्वासिकण वास्तविक कण नहीं होते, बल्कि कणों के सामूहिक व्यवहार को एकल कण की तरह मॉडल करने का तरीका होते हैं।
- उदाहरण: जल में लहरें स्वयं कण नहीं होतीं, लेकिन वे उन अणुओं की सामूहिक गति से उत्पन्न “तरंगों” की तरह व्यवहार करती हैं।

कणों की मूल बातें कणों को सामान्यतः पर दो वर्गों में बाँटा जाता है:

- फर्मियन:** ये कण पदार्थ का निर्माण करते हैं और इनमें आधा-अपूर्णांक स्पिन होता है (जैसे इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन)।
- बोसॉन:** ये कण पदार्थ के बीच मूलभूत बलों का संचार करते हैं, जैसे कि फोटॉन विद्युतचुंबकीय बल के लिए और ग्लूऑन मजबूत बल के लिए बोसॉनों में पूर्णांक स्पिन होता है।

फर्मियन को आगे दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है:

- डिराक फर्मियन:** इनमें द्रव्यमान हो सकता है या नहीं, लेकिन ये अपने प्रतिकणों से भिन्न होते हैं।
- मेजोराना फर्मियन:** ऐसे फर्मियन जो स्वयं अपने प्रतिकण होते हैं (जैसे न्यूट्रिनो को मेजोराना फर्मियन होने का संदेह है)।

Source: TH

DISCOM की नियामक परिसंपत्तियों पर सर्वोच्च न्यायालय का आदेश

संदर्भ

- हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने राज्य विद्युत विनियामक आयोगों (SERCs) और वितरण कंपनियों (DISCOMs) को निर्देश दिया कि वे अपने संचित विनियामक परिसंपत्तियों को एक निर्धारित समयसीमा के अंदर समाप्त करें।

विनियामक परिसंपत्तियाँ क्या हैं?

- विनियामक परिसंपत्तियाँ वह अपूर्ण राजस्व अंतर हैं जो औसत आपूर्ति लागत (ACS)—अर्थात् DISCOM द्वारा उपभोक्ताओं तक एक यूनिट विद्युत पहुँचाने में हुआ व्यय—और वार्षिक राजस्व आवश्यकता (ARR) के बीच के अंतर से उत्पन्न होता है।
 - ARR वह राजस्व है जो DISCOM उपभोक्ता शुल्क और सरकार से प्राप्त सब्सिडी के रूप में एकत्र करता है।
- तत्काल शुल्क वृद्धि के बजाय, नियामक DISCOMs को इन घाटों को आगे ले जाने और बाद में उपभोक्ताओं से वसूलने की अनुमति देते हैं।

- यह अचानक शुल्क वृद्धि को रोकता है, लेकिन समय के साथ उपभोक्ताओं और DISCOMs दोनों पर भार डालने वाली छिपी हुई देनदारियाँ बनाता है।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय क्या था?

- पुरानी परिसंपत्तियों का निपटान:** न्यायालय ने निर्देश दिया कि वर्तमान विनियामक परिसंपत्तियों को चार वर्षों के अंदर समाप्त किया जाए और नई परिसंपत्तियों को तीन वर्षों में समाप्त किया जाए।
- सीमित सीमा:** न्यायालय ने परामर्श दिया कि विनियामक परिसंपत्ति को DISCOM की वार्षिक राजस्व आवश्यकता (ARR) के 3% तक सीमित किया जाए।
- वसूली योजना:** नियामकों को पारदर्शी वसूली रोडमैप तैयार करने और उन DISCOMs का गहन ऑडिट करने का निर्देश दिया गया जो इन परिसंपत्तियों की वसूली किए बिना कार्यरत हैं।

ACS-ARR अंतर के कारण

- दबाए गए शुल्क:** सामाजिक या चुनावी कारणों से विद्युत की कीमतें लागत से कम रखी जाती हैं।
- सरकारी सब्सिडी में देरी:** किसानों या कमज़ोर वर्गों के लिए वादा की गई सब्सिडियाँ समय पर जारी नहीं होतीं।
- इनपुट लागत में उतार-चढ़ाव:** कोयला और ईंधन की कीमतों में अस्थिरता उत्पादन लागत को बढ़ाती है।
- तकनीकी और वाणिज्यिक हानियाँ:** विद्युत चोरी, गलत बिलिंग और ट्रांसमिशन अक्षमताएँ राजस्व अंतर को बढ़ाती हैं।
- लागत-प्रतिबिंबित शुल्क समायोजन की कमी:** आपूर्ति लागत में वृद्धि के अनुरूप शुल्क नियमित रूप से संशोधित नहीं किए जाते।

विनियामक परिसंपत्तियों के प्रभाव

- उपभोक्ताओं के लिए:**
 - अल्पकाल में उन्हें स्थिर शुल्क का लाभ मिलता है।
 - लेकिन स्थगित वसूली भविष्य में अधिक ब्याज सहित तीव्र शुल्क वृद्धि का कारण बनती है।
- DISCOMs के लिए:**
 - संचित विनियामक परिसंपत्तियाँ नकदी प्रवाह की

समस्याएँ बढ़ाती हैं, जिससे जनरेटरों को भुगतान करना कठिन हो जाता है।

- इससे अधिक उधारी की आवश्यकता होती है, जो वित्तीय तनाव को बढ़ाती है।
- तरलता की कमी अवसंरचना, नवीकरणीय ऊर्जा और ग्रिड आधुनिकीकरण में निवेश को बाधित करती है।

ACS-ARR अंतर को कैसे पाटा जा सकता है?

- लागत-प्रतिबिंबित शुल्क:** नियामकों को वास्तविक आपूर्ति लागत को दर्शाने वाले शुल्क तय करने चाहिए, और कमज़ोर वर्गों के लिए लक्षित सब्सिडी प्रदान करनी चाहिए।
- सब्सिडी का समय पर वितरण:** राज्य सरकारों को बिना देरी के सब्सिडी का वितरण सुनिश्चित करना चाहिए।
- ईंधन लागत पास-थ्रू तंत्र:** जब इनपुट लागत बढ़े तो स्वचालित शुल्क समायोजन लागू किया जाना चाहिए।
- वार्षिक 'टू-अप' अभ्यास:** नियामकों को अनुमानित और वास्तविक लागत का वार्षिक मिलान करना चाहिए ताकि बैकलॉग न बने।
- दक्षता में सुधार:** स्मार्ट मीटर, बेहतर बिलिंग प्रणाली और चोरी के विरुद्ध सख्त प्रवर्तन में निवेश से हानियाँ कम की जा सकती हैं।

वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाएँ क्या हैं?

- RAB मॉडल (रेगुलेटेड एसेट बेस):** उपयोगिताओं को विनियामक परिसंपत्तियों में निवेश की वसूली शुल्क के माध्यम से करने की अनुमति दी जाती है, जिसमें परिसंपत्ति आधार पर विनियमित प्रतिफल दर होती है, जिससे दीर्घकालिक राजस्व सुनिश्चित होता है।
- RIIO मॉडल ((राजस्व = प्रोत्साहन + नवाचार + आउटपुट):** उपयोगिता राजस्व को परिसंपत्ति निवेश और स्पष्ट रूप से परिभाषित आउटपुट मापदंडों जैसे—विश्वसनीयता, ग्राहक सेवा और कार्बन कटौती—से जोड़ता है, जिससे जवाबदेही और प्रदर्शन प्रोत्साहन सुदृढ़ होते हैं।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

सेशेल्स (Seychelles)

समाचार

- भारतीय नौसेना के जहाज आईएनएस तीर, आईएनएस शार्दुल और भारतीय तटरक्षक बल का जहाज आईसीजीएस सारथी, जिसमें प्रथम प्रशिक्षण स्कवाइन (1TS) शामिल है, सेशेल्स पहुँच गए हैं।

सेशेल्स

- सेशेल्स 115 द्वीपों का एक द्वीपसमूह है।
- यह केन्या के पूर्व और मेडागास्कर के उत्तर-पूर्व में स्थित है।
- इसकी राजधानी विक्टोरिया, माहे द्वीप पर स्थित है।
- प्रमुख समुद्री मार्गों पर स्थित होने के कारण यह भारत के लिए सामरिक महत्व रखता है।

भारत के लिए महत्व

- भारत और सेशेल्स के बीच गहरे ऐतिहासिक संबंध हैं, जहाँ भारतीय मूल के लोग 1770 से ही बस गए थे।
- रक्षा, समुद्री सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान सहित द्विपक्षीय संबंध लगातार विकसित हुए हैं।
- भारत ने गश्ती जहाज उपहार में देने, जल सर्वेक्षण करने और तटीय निगरानी रडार प्रणाली स्थापित करने जैसी पहलों के माध्यम से सेशेल्स का समर्थन किया है।
- हाल के प्रयासों में अनुदान सहायता के अंतर्गत संयुक्त परियोजनाएँ और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन में सहयोग शामिल हैं।

Source :TH

एकैथअमीबा

संदर्भ

- केरल स्वास्थ्य विभाग को आशंका है कि राज्य की जलाशयों में एकैथअमीबा की उपस्थिति पहले की अपेक्षा कहीं अधिक व्यापक हो सकती है।

एकैथअमीबा

- एकैथअमीबा स्वतंत्र रूप से रहने वाले प्रोटोज़ोआ अमीबा (एककोशिकीय जीव) हैं, जो पर्यावरण में

व्यापक रूप से पाए जाते हैं (मृदा, वायु, धूल, स्वच्छ जल, समुद्री जल, कॉन्टैक्ट लेंस केस, स्विमिंग पूल, अस्पताल उपकरण)।

- ये वास्तविक परजीवी नहीं हैं, क्योंकि ये मनुष्यों या जानवरों को संक्रमित किए बिना अपना जीवन चक्र पूरा कर सकते हैं।

एकैथअमीबा द्वारा उत्पन्न रोगजनक संक्रमण:

- एकैथअमीबा केराटाइटिस (AK):** आंख का संक्रमण, सामान्यतः कॉन्टैक्ट लेंस उपयोगकर्ताओं में होता है।
 - लक्षण:** तीव्र दर्द, लालिमा, धुंधली दृष्टि, प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता, कॉर्नियल अल्सरेशन।
 - जोखिम कारक:** कॉन्टैक्ट लेंस की अनुचित सफाई, लेंस पहनते समय दूषित जल के संपर्क में आना।
- ग्रैनुलोमैट्स अमीबिक एन्सेफलाइटिस (GAE):** दुर्लभ लेकिन सामान्यतः घातक मस्तिष्क संक्रमण।
 - मुख्य रूप से प्रतिरक्षा-क्षीण व्यक्तियों (HIV/AIDS, ट्रांसप्लांट, कैंसर रोगी) में होता है।**
 - लक्षण:** सिरदर्द, बुखार, दौरे, भ्रम, तंत्रिका संबंधी दुर्बलता।
- प्रसारित एकैथअमीबा संक्रमण:** प्रतिरक्षा-क्षीण रोगियों में यह संक्रमण त्वचा, फेफड़ों, साइनस तक फैल सकता है।
 - लक्षण:** दीर्घकालिक अल्सर, फोड़े या गाठें।
 - उपचार कठिन बना रहता है:** समग्र रूप से, उपचारात्मक परिणाम मिश्रित होते हैं, जिसका कारण है निदान में देरी और रोगी की अंतर्निहित कमजोरियाँ।

Source: TH

अत्यधिक वर्षा से कर्नाटक के कॉफी बागानों को खतरा

संदर्भ

- भारत के कॉफी उत्पादक क्षेत्र, कर्नाटक के चिकमगलूर, कूर्ग और हासन ज़िले, लगातार बारिश, अत्यधिक ठंड एवं धूप की कमी से प्रभावित हैं।

कॉफ़ी उत्पादन के लिए भौगोलिक परिस्थितियाँ

- **जलवायु:** कॉफ़ी उष्णकटिबंधीय जलवायु में अच्छी तरह उगती है।
 - ▲ इसके लिए हल्की सर्दियों वाली गर्म, आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है।
 - ▲ स्वस्थ विकास के लिए छाया आवश्यक है, और कॉफ़ी प्रायः पेड़ों की आड़ में उगाई जाती है।
- **मृदा:** अच्छी जल निकासी वाली, उपजाऊ मृदा, ह्यूमस और कार्बनिक पदार्थों से भरपूर, की आवश्यकता होती है।
 - ▲ मृदा थोड़ी अम्लीय होनी चाहिए, जिसका pH मान 6.0-6.5 हो।
- **तापमान:** आदर्श वार्षिक तापमान 15°C और 28°C के बीच होता है।
 - ▲ पाला कॉफ़ी के पौधों के लिए हानिकारक होता है, और अत्यधिक उष्ण या शुष्क परिस्थितियाँ भी उपज को कम कर देती हैं।
- **बर्बा:** कॉफ़ी समुद्र तल से 600-1,600 मीटर की ऊँचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों में उगती है।
 - ▲ ढलानदार भूभाग उचित जल निकासी सुनिश्चित करता है और जलभराव को रोकता है।
- प्रमुख कॉफ़ी उत्पादक राज्य कर्नाटक (सबसे बड़ा उत्पादक, भारत की कॉफ़ी का लगभग 70% उत्पादन करता है), केरल और तमिलनाडु हैं।
 - ▲ अन्य उभरते राज्य हैं: आंध्र प्रदेश, ओडिशा और पूर्वोत्तर क्षेत्र (मुख्य रूप से अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और मेघालय)।

Source: TH

पीएम गतिशक्ति के अंतर्गत नेटवर्क योजना समूह की 99वीं बैठक संदर्भ

- प्रधानमंत्री गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के तहत नेटवर्क प्लानिंग ग्रुप (NPG) की 99वीं बैठक नई दिल्ली में आयोजित की गई।

बैठक में मूल्यांकन किए गए परियोजनाएँ

- **रेल मंत्रालय (MoR):**
 - ▲ जम्मू और कश्मीर में बारामुला से उरी तक 40.2 किमी लंबी नई ब्रॉड गेज (BG) रेल लाइन।
 - ▲ जम्मू और कश्मीर में काज़ीगुंड-बड़गाम रेल लाइन का दोहरीकरण।
 - ▲ अंबाला-जालंधर (पंजाब और हरियाणा) के बीच प्रस्तावित तीसरी और चौथी रेल लाइन।
- **सड़क परियोजना (सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय):** खगड़िया-पूर्णिया चार-लेन राजमार्ग (बिहार)।

प्रधानमंत्री गति शक्ति के बारे में

- इसकी शुरुआत 2021 में देश के बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने और विभिन्न क्षेत्रों में निर्बाध संपर्क को बढ़ावा देने के लिए की गई थी।
- यह आर्थिक विकास और सतत विकास के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण है, जो सात इंजन द्वारा संचालित है — रेलवे, सड़कें, बंदरगाह, जलमार्ग, हवाई अड्डे, जन परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स अवसंरचना।
- **क्रियान्वयन:** प्रधानमंत्री गति शक्ति विभिन्न मंत्रालयों और राज्य सरकारों की अवसंरचना योजनाओं को समाहित करेगा जैसे कि भारतमाला, सागरमाला, अंतर्रेशीय जलमार्ग, ड्राई/लैंड पोर्ट, उड़ान आदि।
 - ▲ वस्त्र क्लस्टर, औषधि क्लस्टर, रक्षा गलियारे, इलेक्ट्रॉनिक पार्क, औद्योगिक गलियारे, मत्स्य क्लस्टर, कृषि क्षेत्र जैसे आर्थिक ज्ञोन को बेहतर संपर्क प्रदान करने और भारतीय व्यवसायों को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए शामिल किया जाएगा।
 - ▲ यह तकनीक का व्यापक उपयोग भी करेगा, जिसमें ISRO (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) की इमेजरी और BiSAG-N (भास्कराचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग और भू-सूचना संस्थान) द्वारा विकसित स्थानिक योजना उपकरण शामिल हैं।

Source: PIB

सतत विमानन ईंधन(SAF)

संदर्भ

- नागरिक उड़ायन मंत्रालय ने अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड़ायन संगठन (ICAO) के साथ साझेदारी में और यूरोपीय संघ के सहयोग से भारत के लिए सतत विमानन ईंधन (SAF) की व्यवहार्यता अध्ययन रिपोर्ट आधिकारिक रूप से जारी की है।
- व्यवहार्यता अध्ययन का उद्देश्य यह अध्ययन भारत में ड्रॉप-इन सतत विमानन ईंधन (SAF) के उत्पादन और उपयोग की संभावनाओं का मूल्यांकन करता है।

भारत की आत्मनिर्भरता की दिशा में तैयारी

- भारत ने CORSIA अनिवार्यता के अनुरूप SAF मिश्रण के लिए लक्ष्य निर्धारित किए हैं:
 - 2027 तक 1% मिश्रण
 - 2028 तक 2% मिश्रण
 - 2030 तक 5% मिश्रण

सतत विमानन ईंधन (SAF)

- SAF एक वैकल्पिक ईंधन है जो गैर-पेट्रोलियम स्रोतों से बनाया जाता है और हवाई परिवहन से होने वाले उत्सर्जन को कम करता है।
- SAF को विभिन्न स्तरों पर मिश्रित किया जा सकता है, जिसकी सीमा 10% से 50% तक होती है, यह स्रोत और उत्पादन तकनीक पर निर्भर करता है।
- SAF की आवश्यकता**
 - वैश्विक स्तर पर, विमानन 2% कुल कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) उत्सर्जन और परिवहन क्षेत्र के 12% CO_2 उत्सर्जन के लिए उत्तरदायी है।
 - ICAO की योजना CORSIA (अंतर्राष्ट्रीय विमानन के लिए कार्बन ऑफसेटिंग और न्यूनीकरण योजना) के अंतर्गत 2020 से 2035 तक विमानन उत्सर्जन को उसी स्तर पर सीमित करती है।
 - अंतर्राष्ट्रीय विमानन उद्योग ने 2050 तक शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।
 - SAF इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निकट भविष्य में सबसे उपयुक्त विकल्प प्रस्तुत करता है।

लाभ

- इंजन और अवसंरचना संगतता: SAF को पारंपरिक जेट A ईंधन के साथ मिश्रित कर वर्तमान विमानों और अवसंरचना में उपयोग किया जा सकता है।
- कम उत्सर्जन: पारंपरिक जेट ईंधन की तुलना में, 100% SAF ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को स्रोत और तकनीक के आधार पर 94% तक कम कर सकता है।
- अधिक लचीलापन: SAF पारंपरिक जेट ईंधन का विकल्प है, जो विभिन्न स्रोतों और उत्पादन तकनीकों से कई प्रकार के उत्पादों की अनुमति देता है।

क्या आप जानते हैं?

- भारत तीसरा सबसे बड़ा विमानन बाजार है, और 2030 तक यात्री संख्या दोगुनी होकर 500 मिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है।
- भारत विश्व का सबसे बड़ा घरेलू विमानन बाजार बनने की दिशा में अग्रसर है।

Source: PIB

जीएसटी परिषद की 56वीं बैठक की सिफारिशें

समाचार में

- 56वीं जीएसटी परिषद की बैठक में व्यक्तियों, आम जनता और आकांक्षी मध्यम वर्ग को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से जीएसटी दरों में बदलाव की सिफारिश की गई।

जीएसटी परिषद

- यह अनुच्छेद 279A के अंतर्गत स्थापित एक संवैधानिक निकाय है, जो केंद्र और राज्यों का संयुक्त मंच बनकर प्रमुख जीएसटी मामलों पर सिफारिशें करता है।
- इसकी अध्यक्षता केंद्रीय वित्त मंत्री करते हैं।
- इसके कार्यों में जीएसटी दरों, छूटों, सीमा निर्धारण, मॉडल कानूनों और विशेष राज्यों के लिए विशेष प्रावधानों पर परामर्श देना शामिल है।

हालिया सिफारिशें

- 56वीं जीएसटी परिषद की बैठक अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधारों पर केंद्रित रही, जिसमें दरों का युक्तिकरण और अनुपालन को सरल बनाना शामिल था।

DAILY ESSENTIALS	FROM	TO
Hair Oil, Shampoo, Toothpaste, Toilet Soap Bar, Tooth Brushes, Shaving Cream	18%	5%
Butter, Ghee, Cheese & Dairy Spreads	12%	5%
Pre-packaged Namkeens, Bhujia & Mixtures	12%	5%
Utensils	12%	5%
Feeding Bottles, Napkins for Babies & Clinical Diapers	12%	5%
Sewing Machines & Parts	12%	5%

HEALTHCARE SECTOR	FROM	TO
Individual Health & Life Insurance	18%	Nil
Thermometer	18%	5%
Medical Grade Oxygen	12%	5%
All Diagnostic Kits & Reagents	12%	5%
Glucometer & Test Strips	12%	5%
Corrective Spectacles	12%	5%

AUTOMOBILES	FROM	TO
Petrol & Petrol Hybrid, LPG, CNG Cars (not exceeding 1200 cc & 4000mm)	28%	18%
Diesel & Diesel Hybrid Cars (not exceeding 1500 cc & 4000mm)	28%	18%
3 Wheeled Vehicles	28%	18%
Motor Cycles (350 cc & below)	28%	18%
Motor Vehicles for transport of goods	28%	18%

FARMERS & AGRICULTURE	FROM	TO
Tractor Tyres & Parts	18%	5%
Tractors	12%	5%
Specified Bio-Pesticides, Micro-Nutrients	12%	5%
Drip Irrigation System & Sprinklers	12%	5%
Agricultural, Horticultural or Forestry Machines for Soil Preparation, Cultivation, Harvesting & Threshing	12%	5%

EDUCATION	FROM	TO
Maps, Charts & Globes	12%	Nil
Pencils, Sharpeners, Crayons & Pastels	12%	Nil
Exercise Books & Notebooks	12%	Nil
Eraser	5%	Nil

ELECTRONIC APPLIANCES	FROM	TO
Air Conditioners	28%	18%
Television (above 32") (including LED & LCD TVs)	28%	18%
Monitors & Projectors	28%	18%
Dish Washing Machines	28%	18%

- एक सरल तीन-स्तरीय दर संरचना प्रस्तुत की गई: 5%, 18%, और पाप/विलासिता वस्तुओं के लिए विशेष 40% दर।
- मुख्य निष्कर्षों में शामिल हैं: साबुन, शैम्पू, टूथपेस्ट और खाद्य वस्तुओं पर जीएसटी घटाकर 5% करना, सभी जीवन और स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियों पर जीएसटी से छूट, और 33 जीवनरक्षक दवाओं व 3 महत्वपूर्ण औषधियों पर शून्य जीएसटी।
- चिकित्सा और कृषि उपकरणों पर अब केवल 5% जीएसटी लगेगा, जबकि एसी, बड़े टीवी और छोटे बाहनों जैसे उपकरणों पर जीएसटी 28% से घटाकर 18% कर दिया गया है।

Source :PIB

भारत का प्रथम गिर्द संरक्षण पोर्टल

समाचार में

- वी फाउंडेशन इंडिया ने गुवाहाटी विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग के सहयोग से भारत का पहला गिर्द संरक्षण पोर्टल लॉन्च किया है, जिसका उद्देश्य इन महत्वपूर्ण सफाई पक्षियों की रक्षा के लिए एक नेटवर्क बनाना है।

गिर्द

- गिर्द बड़े आकार के, सामाजिक शिकारी पक्षी होते हैं जो अंटार्कटिका और ऑस्ट्रेलिया को छोड़कर प्रत्येक महाद्वीप पर पाए जाते हैं।
- इनकी 23 प्रजातियाँ दो वर्गों में विभाजित हैं — अमेरिका की न्यू वर्ल्ड गिर्द और यूरोप, एशिया व अफ्रीका की ओल्ड वर्ल्ड गिर्द।

भारत में स्थिति

- भारत में नौ प्रजातियों के गिर्द वन्य क्षेत्र में पाए जाते हैं, जिनकी IUCN रेड लिस्ट स्थिति निम्नलिखित है:
 - ओरिएंटल व्हाइट-बैकड गिर्द (Gyps bengalensis): अत्यंत संकटग्रस्त
 - स्लेंडर बिल्ड गिर्द (Gyps tenuirostris): अत्यंत संकटग्रस्त
 - इंडियन गिर्द या लॉना बिल्ड गिर्द (Gyps indicus): अत्यंत संकटग्रस्त
 - इजिषियन गिर्द (Neophron percnopterus): संकटग्रस्त
 - रेड हेडेड गिर्द (Sarcogyps calvus): अत्यंत संकटग्रस्त
 - इंडियन ग्रिफॉन गिर्द (Gyps fulvus): कम चिंता का विषय
 - हिमालयन ग्रिफॉन (Gyps himalayensis): निकट संकटग्रस्त
 - सिनेरियस गिर्द (Aegypius monachus): निकट संकटग्रस्त
 - बीडेंड गिर्द या लैमरगाइर (Gypaetus barbatus): निकट संकटग्रस्त

खतरे

- गिर्द पारिस्थितिकी तंत्र की सेहत के लिए अत्यंत आवश्यक हैं, लेकिन डाइक्लोफेनाक विषाक्तता, आवास क्षति और मानव हस्तक्षेप के कारण इनकी संख्या में गंभीर गिरावट आई है।

हालिया संरक्षण प्रयास

- भारत का पहला गिर्द संरक्षण पोर्टल एक राष्ट्रीय नेटवर्क बनाने का प्रयास है जो गिर्दों की सुरक्षा को समर्थन प्रदान करेगा।
- यह असमिया जैसी स्थानीय भाषाओं में जागरूकता फैलाने पर केंद्रित है ताकि बुनियादी स्तर की समुदायों को सक्रिय रूप से जोड़ा जा सके।

Source :TH

अभ्यास युद्ध अभ्यास

संदर्भ

- भारत-अमेरिका संयुक्त सैन्य अभ्यास युद्ध अभ्यास का 21वां संस्करण अलास्का, अमेरिका में शुरू हुआ।

अभ्यास के बारे में

- युद्ध अभ्यास, जिसका हिंदी में अर्थ है “युद्ध की तैयारी”, 2004 में एक आतंकवाद-रोधी प्रशिक्षण आदान-प्रदान के रूप में शुरू हुआ था। तब से, यह भारत और अमेरिका के बीच बारी-बारी से प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता रहा है।
- यह अभ्यास संयुक्त रूप से नियोजित सामरिक युद्धाभ्यासों के साथ समाप्त होगा, जिसमें लाइव-फायर अभ्यास से लेकर उच्च-ऊंचाई वाले युद्ध परिदृश्य शामिल होंगे, जिसमें संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों और बहु-क्षेत्रीय चुनौतियों के लिए तैयारी बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

Source: PIB

